an>

title: Need to take steps to promote Ayurvedic Medicinal System in the country.

श्रीमती रीती पाठक (सीधी) : सभापति महोदय, मैं आदरणीय प्रधान मंत्री तथा आदरणीय स्वास्थ्य मंत्री जी को धन्यवाद देती हूं, जिन्होंने स्वास्थ्य के क्षेत्र में विशेष आयाम प्रस्तुत करने के प्रयास किये हैं। आज मैं आयुर्वेद प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली का विषय सदन में रखने जा रही हूं। प्राचीन जीवन पद्धति में आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हमारे देश में ऋषि सुश्रुत, धनवंतरि और चरक जैसे आयुर्वेद के ज्ञाता रहे हैं। जिनके कारण आयुर्वेद को मात्र चिकित्सा पद्धति नहीं, बल्कि हमारे जीवन संस्कृति का आधार माना जाता है। यह प्रकृति पर हमारे श्रद्धा और समन्वय का ही परिणाम रहा है कि आज हमारे देश में औषधियों और जड़ी-बूटियों का विशेष भंडार रहा है।

महोदय, हल्दी का उपयोग हम घरों में सामान्य रूप से करते आए हैं। उसके गुणों को समझकर कई देशों ने इसका पेटेन्ट करने का प्रयास किया है और सिर्फ हल्दी ही नहीं बल्कि तुलसी, परिजात, अदरक जैसी प्राकृतिक एंटीबायोटिक और स्वास्थ्यवर्धक औषधियां जो अपने गुणों के कारण हमारी दिनचर्या और खान-पान का हिस्सा रही हैं, जिनके कारण हम गम्भीर रोगों से निजात पाते हैं, उन्हें भी इस श्रेणी में लाने का प्रयास किया है।

माननीय सभापति : अब आप समाप्त कीजिए। मैंने पहले ही कहा है कि समय कम है। श्री विद्युत वरण महतो, आप बोलिये।

श्रीमती रीती पाठक : सभापति जी, मैं अपना विषय रख लूं। मैं चाहती हूं कि जिस तरह से एलोपैथिक चिकित्सा प्रणाली को हमारी सरकार ने बढ़ावा देने का प्रयास किया है, उसी तरह से आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली के लिए सारे संसाधन उपलब्ध कराकर तथा पर्याप्त बजट की व्यवस्था करके इसे व्यवस्थित और स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए।

माननीय सभापति :

श्री शरद त्रिपाठी,

कुंवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल तथा

श्री भैरों प्रसाद मिश्र को श्रीमती रीती पाठक द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।